P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जनपद देवरिया (उ0प्र0) में भूमि उपयोग का परिवर्तित स्वरूप एवं कृषि भूमि पर प्रभाव

सारांश

भूमि एक अजैविक संसाधन है, इसका उपयोग सामान्य सुलभ संसाधन के रूप में किया जाता है। डी0एस0 चौहान वर्ष (1966) के अनुसार ''प्राकृतिक पर्यावरण में भूमि–प्रयोग एक तत्सामयिक प्रक्रिया है, जबकि मानवीय इच्छाओं के अनुरूप अपनाया गया भूमि–उपयोग एक दीर्घ कालिक प्रक्रिया है।'' भूमि संसाधन पर सभी प्रकार के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्य प्रत्युत्पन्न होते हैं। मानव की आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में भूमि अपनी क्षमता के अनुसार एक संसाधन के रूप में प्रतिष्ठित हो जाती है। भूमि उपयोग के कालिक परिवर्तन प्रतिरूप के अध्ययन से भूमि क्षमता एवं गुणवत्ता आदि के बारें में जानकारी प्राप्त होती है।

अध्ययन क्षेत्र देवरिया जनपद पूर्वी उत्तर प्रदेश के सरयू पार मैदान में अवस्थित है, जहाँ कृषिगत भूमि की बहुलता है। अध्ययन क्षेत्र के सभी विकासखण्डों में वर्ष 2001 से 2016 तक के भूमि उपयोग अध्ययन से भूमि उपयोग के कालिक परिवर्तन की प्रवृत्ति स्पष्ट हो जाती है। अध्ययन से यह तथ्य सामनें आया है कि वर्ष 2001 में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 198516 हेक्टेअर (79.74%) तथा वर्ष 2016 में 194626 हेक्टेअर (78.64%) है, जो 3890 हेक्टेअर (1.10%) कमी को प्रदर्शित करता है। इसका मुख्य कारण कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि जो वर्ष 2001 में 27651 हेक्टेअर (11.10%) थी वह वर्ष 2016 में 33888 हेक्टेअर (13.56%) हो गयी जो 6237 हेक्टेअर (2.46%) की वृद्धि को प्रदर्शित करता है। जनसंख्या भार के चलते कृषि भूमि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में वृद्धि तथा कृषि बेकार भूमि, परती भूमि, ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि, उद्यानों, झाड़ियों एवं वन भूमि में कमी आयी है।

जगदेव
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग,
वीर बहादूर सिंह पूर्वांचल
विश्व विद्यालय,
जौनपुर, उ0 प्र0, भारत

डडेश कुमार
शोध छात्र
भूगोल विभाग,
वीर बहादूर सिंह पूर्वांचल
विश्व विद्यालय,
जौनपुर, उ0 प्र0, भारत

मुख्य शब्द : भूमि उपयोग, सामान्य भूमि उपयोग, कृषि क्षेत्र, भूमि संसाधन, शुद्ध कृषि भूमि वनाच्छादित भूमि, चारागाह, परती भूमि, ऊसर भूमि, कृषि अयोग्य भूमि, कालिक परितर्वतन।

प्रस्तावना

भूमि मूलतः अजैविक संसाधन होते हुए भी जैविक समुदाय का मूलभूत आधार है। समस्त जैविक समुदाय के जीवन का आधार भूमि है। प्रकृति द्वारा प्रदत्त भूमि संसाधन का सुव्यवस्थित उपयोग ही मानव समुदाय के साथ–साथ अन्य सभी जैविक समुदाय के जीवन स्तर का निर्धारण करता है। फाक्स 'के मतानुसार' ''भूमि उपयोग के अन्तर्गत भू–भाग प्रकृत–प्रदत्त विशेषताओं के अनुरूप रहा है। जब भू–भाग का प्राकृतिक रूप लुप्त हो जाता है, तथा मानवीय क्रियाओं का योगदान महत्वपूर्ण हो जाता है तब उसे 'भूमि उपयोग' कहते हैं।'' डॉ0 डी0 एस0 चौहान के अनुसार ''प्राकृतिक पर्यावरण में भूमि प्रयोग एक तात्कालिक प्रक्रिया है। जबकि भूमि उपयोग तथा भूमि मानवीय इच्छाओं के अनुरूप अपनाई गई दीर्घ कालिक प्रक्रिया हैं'' स्पष्ट है कि भूमि–प्रयोग तथा भूमि उपयोग में सूक्ष्म अन्तर है। दोनों शब्द दो अलग–अलग परिस्थितियों के सूचक हैं। वुड ने बताया कि भूमि प्रयोग केवल प्राकृतिक भू–दृष्य के सन्दर्भ में ही नहीं अपितु मानवीय क्रियाओं पर आधारित उपयोगी सुधारों के रूप में भी प्रयुक्त होना चाहिए।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया के विभिन्न विकासखण्डों में भूमि उपयोग के परिवर्तित स्वरूप से कृषि भूमि में हो रहे कालिक परिवर्तन को प्रकाश में लाना है ताकि उसके आधार पर कृषि भूमि में वृद्धि एवं विकास पर आयोजन प्रस्तुत की जा सके।

साहित्यावलोकन

किसी भी क्षेत्र में पाये जाने वाली भूमि संसाधन का उपयोग वहाँ की जनसंख्या के प्रतिरूप के उपर निर्भर करता है। जनसंख्या की कार्य कुशलता ही भूमि उपयोग के प्रतिरूप का निर्धारण करती है। अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया भूमि संसाधन से परिपूर्ण है। भूमि उपयोग का स्वरूप जनसंख्या की वृद्धि के साथ–साथ बदलता जाता है। यहाँ निवास करने वाली जनसंख्या भूमि संसाधन को पूर्ण रूप से नवाचार विधियों के द्वारा उपयोगी स्वरूप प्रदान करने में अक्षम रही है। परिणाम स्वरूप जनसंख्या के सन्दर्भ में भूमि का पूर्ण उपयोग सम्भव नहीं हो सका।

परिकल्पना

जनपद देवरिया में भूमि संसाधन का विकास वहाँ निवास करने वाली जनसंख्या के साथ ही साथ सरकार द्वारा निर्धारित नवाचार की नीतियों पर निर्भर करता है। अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग के विकास एवं जनसंख्या गतिशीलता में सह–सम्बन्ध पाया जा रहा है। इस क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या का जीवन स्तर भूमि संसाधन के विकास पर ही निर्भर करता है। अल्प विकास के प्रमुख कारणों में भूमि का उपयोग परम्परागत विधि से माना जा सकता है। कृषि भूमि के विकास के लिये अनुकूलतम कृषि भूमि प्रबन्धन की आवश्यकता है।

आँकड़ों का स्रोत एवं विधितन्त्र

प्रस्तुत अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित हैं। प्राथमिक आँकड़ें प्रायः सर्वेक्षण पर आधारित होते हैं। इन आँकड़ों का एकत्रीकरण कृषकों से व्यक्तित्व पूछ–ताछ प्रक्रिया के द्वारा किया गया है। इसी प्रकार द्वितीयक आँकड़ें विकासखण्ड, तहसील, जनपद एवं बोर्ड ऑफ रेवेन्यू लखनऊ आदि कार्यलयों से प्रकाशित एवं अप्रकाशित दोनों रूपों से लिया गया है। जिसमें वन भूमि, परती भूमि, ऊसर भूमि, कृषि भूमि, बंजर भूमि, अन्य उपयोग की भूमि आदि सम्बन्धी प्रमुख आँकड़ें हैं। प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक एवं विवेचनात्मक विधितंत्रों का प्रयोग करते हुए प्राथमिक एक द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों का कृषि भूमि उपयोग में परिवर्तिन की कालिक जानकारी प्राप्त की गयी है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र देवरिया जनपद पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर मण्डल के अन्तर्गत छोटी गण्डक व घाघरा दोआब में स्थित है। जनपद का भौगोलिक विस्तार $26^0 6'$ उत्तरी $27^0 8'$ उत्तरी अक्षांश तथा $83^0 29'$ पूर्वी देशान्तर से $84^0 14'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है (मानचित्र संख्या 1) जनपद का सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल 2528 वर्ग किलोमीटर है। प्रशासनिक दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र को 16 विकासखण्डों (गौरी बाजार, बैतालपुर, देसई देवरिया, पथरदेवा, रामपुर कारखाना, देवरिया सदर, रूद्रपुर, भलुअनी, बरहज, भटनी, भाटपाररानी, बनकटा, सलेमपुर, भागलपुर, लार, तरकुलवा), 5 तहसीलों 179 न्याय पंचायतों एवं 1017 ग्राम पंचायतों में विभक्त किया गया है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद में लगभग 2784143 जनसंख्या है जिसमें 1373111 पुरूष तथा 1411032 स्त्री जनसंख्या पायी जाती है। जनगणना वर्ष 2011 में कुल ग्रामों की संख्या 2162 है, इसमें से 2009 ग्राम आबाद और 153 ग्राम गैर–आबाद ग्राम है। जबकि नगरों की कुल संख्या 10 है।

(देवरिया जनपद का मानचित्र)

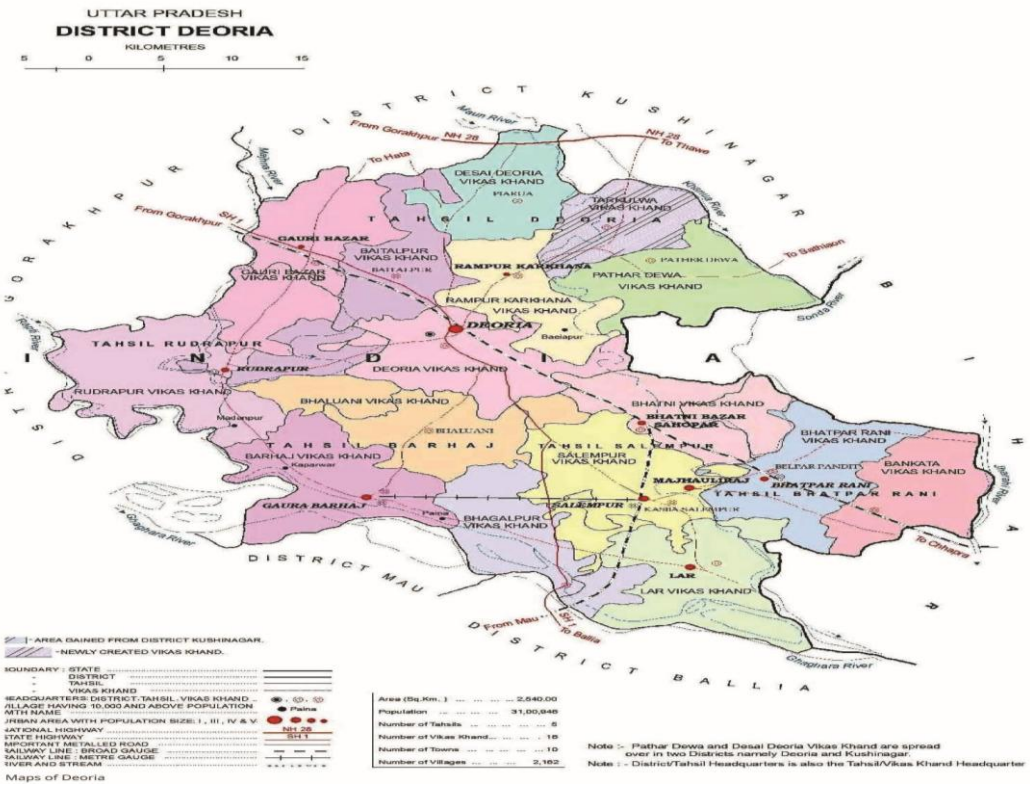

विश्लेषण एवं व्याख्या

आधुनिक वैज्ञानिक युग में सभी उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग हेतु नित नए तकनीकि ज्ञान एवं संयत्रों की खोज एवं विकास किया जा रहा है। भूमि उपयोग की इस प्रकार की उपलब्धियों से पूर्णरूपेण प्रभावित है। जनपद के भूमि उपयोग प्रतिरूप के परिर्वतित स्वरूप का अधिक से अधिक विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है। साथ ही वर्ष 2016–17 के अनुसार विकासखण्ड स्तर पर भूमि उपयोग प्रतिरूप का विवेचन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2016–17 के अनुसार विकासखण्डानुसार भूमि उपयोग प्रतिरूप का विवरण तालिका संख्या 3 से स्पष्ट है। तालिका संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट हो जाता है कि जनपद देवरिया में वर्ष 2001–02 की तुलना में वर्ष 2016–17 में वन क्षेत्रफल 0.10 प्रतिशत पर यथावत बना हुआ है; कृष्य बेकार भूमि 0.77 प्रतिशत से घटकर 0.75 प्रतिशत, परती भूमि 5.30 प्रतिशत से घटकर 4.86 प्रतिशत, ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि 1.35 प्रतिशत से घटकर 0.68 प्रतिशत, कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में 11.10 प्रतिशत से बढ़कर 13.56 प्रतिशत हो गयी जो इसकी वृद्धि को प्रदर्शित करता है।

इसी प्रकार उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल 1.58 प्रतिशत से घटकर 1.35 प्रतिशत तथा शुद्ध बोया गया क्षेत्र वर्ष 2001–02 में 79.74 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2016–17 में 78.64 प्रतिशत हो गया है। जनपद में भूमि उपयोग प्रारूप का परिवर्तित स्वरूप निम्नलिखित तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है। जनपद में भूमि उपयोग प्रारूप का विवरण निम्नवत है।

तालिका संख्या– 1

क्र0 सं0	भूमि संसाधन उपयोग	वर्ष 2001–02 (%)	वर्ष 2016–17(%)	परिवर्तन (%)
1.	वनाच्छादित भूमि	0.10	0.10	0
2.	कृष्य बेकार भूमि	0.77	0.75	+0.02
3.	परती भूमि	5.30	4.86	+0.44
4.	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	1.35	0.68	+0.67
5.	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	11.10	13.56	-2.46
6.	चारागाह भूमि	0.03	0.03	0
7.	उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्र	1.58	1.35	+0.23
8.	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	79.74	78.64	+1.10
		100.00	100.00	.

स्रोतः उ0प्र0 कृषि आँकड़ों का बुलेटिन

सामान्य भूमि उपयोग प्रतिरूप

भूमि प्रकृति प्रदत्त आर्थिक संसाधन है, जिस पर समस्त सांस्कृतिक अनुक्रियाएँ सम्पन्न होती हैं। जिस क्षेत्र की भूमि जैसी होती है, उसके अनुसार मानवीय क्रिया–कलाप सम्पादित होती है। यदि किसी क्षेत्र विशेष की भूमि कृषिगत होती है, तो वहाँ पर सघन कृषि कार्य होता है। इस प्रकार क्षेत्र विशेष में भूमि उपयोग प्रतिरूप का वहाँ की आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान एवं क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

सामान्य भूमि उपयोग वर्गीकरण–भूमि उपयोग संसाधन

वनाच्छादित भूमि

अध्ययन क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से उगने वाली वनस्पतियों, वृक्षों एवं झाड़ियों के क्षेत्रफल में पिछले वर्षों की तुलना में विकासखण्ड स्तर पर काफी कमी आयी है। सामान्य रूप से जनपद में अध्ययन वर्ष 2001–02 से 2016–17 में 264 हेक्टेअर (0.10%) बना हुआ है। विकासखण्ड स्तर पर वर्ष 2001–02 में सर्वाधिक वन रामपुर कारखना 59 हेक्टेअर (0.45%) तथा न्यूनतम भागलपुर 5 हेक्टअर (0.03%)। इसी प्रकार वर्ष 2016–17 में सर्वाधिक एवं न्यूनतम वन पिछले गणना वर्ष 2001–02 की भाँति बना हुआ हैं। वन क्षत्र के प्रतिशत में सर्वाधिक वृद्धि तरकुलवा (0.11%), शून्य प्रतिशत की वृद्धि बैतालपुर, देवरिया सदर, रूद्रपुर, भलुअनी, सलेमपुर तथा 0.01 प्रतिशत की कमी के साथ देसई देवरिया, पथरदेवा, बरहज, भटनी, भाटपाररानी लार विकासखण्ड है। रामपुर कारखाना तथा बनकटा दो ऐसे विकासखण्ड हैं जहाँ वन क्षेत्र के प्रतिशत में सर्वाधिक कमी (0.03%) है।

कृषि योग्य बंजर भूमि

भूमि उपयोग के सन्दर्भ में ''कृषि योग्य बंजर भूमि'' एक विशिष्ट श्रेणी है, जिसमें कृषिगत क्षेत्र में भावी विकास की सम्भावनाएँ निहित होती हैं। वस्तुतः इस प्रकार की भूमि किन्हीं निश्चित बाधाओं, कठिनाईयों या अनुकूल दशाओं के अभाव में वर्तमान समय में कृषि योग्य नहीं हो पा रही है। परन्तु भविष्य में वैज्ञानिक अनुसंधानों, वांछित परिस्थितियों, उचित संसाधनों की उपलब्धता एवं सरकारी भूमि सुधार कार्यक्रमों द्वारा उसे कृषि उपयोग में लाये जाने की सम्भावना है। अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया में पिछले (2001–02) अध्ययन वर्ष में इस प्रकार की भूमि के क्षेत्रफल में वर्ष 2016–17 में 0.02 प्रतिशत की कमी आयी है। वर्ष 2001–02 के अनुसार जनपद के कुल क्षेत्रफल में कृषि योग्य बंजर भूमि का क्षेत्रफल 0.77 प्रतिशत 1919 हेक्टेअर से घटकर वर्ष 2016–17 में 0.75 प्रतिशत 1887 हेक्टेअर रह गया है (तालिका संख्या–1)। विकासखण्ड स्तर पर कृषि योग्य बंजर भूमि में क्रमशः लार (5.51%), बरहज (1.86%), गौरी बाजार (0.15%) में प्रतिशत वृद्धि तथा बैतालपुर (0.78%), देसई देवरिया (1.74%), पथरदेवा (0.64%), रामपुर कारखाना (1.04%), देवरिया सदर (1.03%), रूद्रपुर (0.43%), भलुअनी (0.08%), भटनी

(0.36%), भाटपार रानी (0.01%), बनकटा (0.32%), सलेमपुर (0.07%), भागलपुर (0.02%), तरकुलवा (0.77%) प्रतिशत की कमी हुई है।

तालिका संख्या– 02

जनपद में विकाखण्डवार भूमि उपयोग (हेक्टे0 में) वर्ष 2001–02

क्र0सं0	विकासखण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल (हेक्टे0 में)	प्रतिशत में							
			वनाच्छादित भूमि	कृष्य बेकार भूमि	परती भूमि	उसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारागाह भूमि	उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल
1	गौरी बाजार	18248	0.05	0.83	4.11	0.15	7.98	0.02	2.55	84.27
2	बैतालपुर	16170	0.09	0.92	3.18	0.26	7.39	0.02	1.57	86.53
3	देसई देवरिया	11057	0.04	1.79	2.37	0.08	11.08	0.07	1.91	82.60
4	पथरदेवा	15841	0.16	0.86	7.54	0.37	11.74	0.05	1.90	77.35
5	रामपुर कारखाना	13058	0.45	1.16	5.44	0.22	10.26	–	2.57	79.92
6	देवरिया सदर	16959	0.07	1.29	3.89	0.07	8.70	0.02	1.78	83.41
7	रूद्रपुर	20533	0.04	0.69	6.59	0.50	13.52	0.04	0.61	77.96
8	भलुआनी	18325	0.06	0.39	5.83	0.52	9.56	0.02	0.70	82.90
9	बरहज	15780	0.11	0.17	7.00	0.60	10.21	0.01	0.86	72.00
10	भटनी	13999	0.18	0.78	5.58	0.78	10.69	0.02	0.88	81.04
11	भाटपार रानी	13087	0.06	0.36	2.98	0.61	10.17	0.04	1.78	83.96
12	बनकटा	14006	0.14	0.64	3.84	0.53	9.67	0.02	1.52	83.58
13	सलेमपुर	15285	0.03	0.47	5.05	0.83	11.39	0.02	0.87	81.30
14	भागलपुर	14401	0.03	0.40	2.81	0.64	12.06	0.04	1.56	82.43
15	लार	18094	0.04	0.32	9.13	10.15	10.44	0.01	3.14	66.75
16	तरकुलवा	9750	0.09	1.03	6.23	0.25	11.94	0.02	1.94	78.81

परती भूमि

परती को सामान्यतया दो भागों में विभाजित किया जाता है, वर्तमान परती भूमि तथा अन्य परती भूमि। वर्तमान परती भूमि के अन्तर्गत वह भूमि सामिल की जाती है, जो वर्तमान वर्ष में परती रखी गयी है। अध्ययन क्षेत्र में पिछले वर्षों में वर्तमान परती भूमि में वृद्धि हुई है। अन्य परती भूमि के अन्तर्गत उस भूमि को शामिल किया जाता है, जिसमें अस्थाई रूप से एक वर्ष से अधिक तथा पाँच वर्ष की अवधि में कृषि नहीं की जा रही है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टिकोण से वर्तमान परती भूमि तथा अन्य परती भूमि को मिलाकर परती भूमि के रूप में संयुक्त रूप से अध्ययन किया गया है। जनपद देवरिया में वर्ष 2001–02 विद्यमान परती भूमि का क्षेत्रफल 12776 हेक्टेअर (5.30%) से घटकर 11968 हेक्टेअर (4.86%) हो गया है। विकास खण्ड स्तर पर देसई देवरिया 2.33%, भलुआनी 0.41%, भटनी 0.27%, भाटपार रानी 1.9%, बनकटा 0.48%, सलेमपुर 1.12%, भागलपुर 0.4%, की परती भूमि में वृद्धि तथा बैतालपुर 0.41%, गौरी बाजार 0%, पथरदेवा 1.65%, रामपुर कारखाना 0.51%, देवरिया सदर 0.77%, रूद्रपुर 0.08%, बरहज 1.82%, सलेमपुर 1.95%, तरकुलवा 0.42%, की कमी हुई है (तालिका संख्या 2 और 3 की तुलना)।

(D) ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि :–

ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि का अभिप्राय वर्तमान सम्बन्ध में ऐसी भूमि से है, जिसमें वैज्ञानिक अनुसंधानों, नवीन कृषि यंत्रों, सिचाई के साधनों, अभिनव तकनीकि ज्ञान तथा ऐसी अन्य सुविधाओं के उपरान्त भी आर्थिक दृष्टि से शुद्ध लाभप्रद कृषिगत क्षेत्र में लाया जा सके। अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया में वर्ष 2001–02 में ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि 3366 हैक्टेअर (1.35%), तथा वर्ष 2016–17 में 1700 हेक्टेअर (0.68%) जो 0.67% ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि में सुधार को प्रदर्शित करता है (तालिका संख्या–1)। विकासखण्ड स्तर पर लार 9.82%, भागलपुर 0.48%, सलेमपुर 0.42%, भाटपाररानी 0.21%, भटनी 0.01%, बरहज 2.96%, भलुअनी 0.06% पिछले अध्ययन वर्ष से सुधार तथा गौरी बाजार 0.74%, बैतालपुर 0.63%, देसई देवरिया 1.09%, पथरदेवा 0.42%, रामपुर कारखाना 0.71%, रूद्रपुर 0.13%, बनकटा 0.17%, तलकुलवा 0.05% की वृद्धि हुई है।

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लायी गई भूमि

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लायी गई भूमि के अन्तर्गत वह भूमि सम्मिलित की जाती है, जिसका उपयोग– इमारतों, सड़कों, रेल मार्गों, नदियों, नहरों जैसे कार्यों में किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि के अतिरिक्त उपयोग में लायी गई भूमि के क्षेत्रफल में वर्ष 2001–02 (27651 हे0) की तुलना में वर्ष 2016–17 (33888 हे0) में 2.46% की वृद्धि कर 13.56% हो गई है। (तालिका संख्या–1) विकासखण्ड स्तर पर कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में गौरी बाजार 3.1%,

बैतालपुर 1.69%, देसई देवरिया 3.34%, पथरदेवा 2.14%, रामपुर कारखाना 6.07%, देवरिया सदर 1.66%, रूद्रपुर 2.37%, भलुआनी 3.77%, बरहज 11.12%, भटनी 2.49%, भाटपाररानी 4.12%, बनकटा 3.7%, सलेमपुर 1.33%, भालगलपुर 2.21%, तथा लार 3.12% की वृद्धि हुई है तालिका संख्या–2 और 3)।

उद्यानों, वृक्षों, झाँड़ियों तथा चारागाह भूमि

इस वर्ग के अन्तर्गत वह कृषि योग्य भूमि सम्मिलित की जाती है, जो वास्तविक बोये गये क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित नहीं है, किन्तु उसका अकृषिक परियोजनाओं में उसका उपयोग हुआ हैं संहत रूप से उगने वाले वृक्षों, झाड़ियों, व घासों के अन्तर्गत नहीं शामिल किए गये हैं, ऐसी भूमि को भी इसके अन्तर्गत शामिल किया जाता है। चारागाह भूमि के अन्तर्गत सभी चाराई के भूमि को सम्मिलित किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में उद्यानों, वृक्षों, झाड़ियों के अन्तर्गत भूमि के क्षेत्र में कमी हुई है। चारागाह भूमि में विकासखण्ड स्तर पर कमी आयी हैं। उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों में अध्ययन वर्ष 2001–02 की तुलना में वर्ष 2016–17 में 0.23% की कमी आयी है।

तालिका सं0–3

जनपद में विकास खण्डवार भूमि उपयोग (हेक्टे0 में) वर्ष 2016–17

क्र0सं0	विकासखण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल(हेक्टे0 में)	प्रतिशत में							
			वनाच्छादित भूमि	कृष्य बेकार भूमि	परती भूमि	उसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारागाह भूमि	उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल
1	गौरी बाजार	16224	0.06	0.98	4.11	0.89	11.04	0.01	1.62	82.13
2	बैतालपुर	16134	0.09	0.14	2.77	0.89	9.09	0.03	1.35	85.60
3	देसई देवरिया	11102	0.05	0.05	4.70	1.37	14.42	0.05	1.71	77.62
4	पथरदेवा	16325	0.15	0.18	5.89	0.79	13.88	0.03	1.48	77.55
5	रामपुर कारखाना	13869	0.42	0.12	4.93	0.93	16.33	0.04	1.75	75.44
6	देवरिया सदर	17303	0.07	0.26	3.12	1.12	10.36	0.02	1.52	83.50
7	रूद्रपुर	21232	0.04	0.26	5.79	0.63	15.89	0.01	0.79	76.55
8	भलुआनी	15976	0.06	0.31	6.24	0.46	13.33	0.02	0.79	78.69
9	बरहज	14577	0.12	2.03	7.18	0.65	21.33	0.02	0.80	67.82
10	भटनी	13540	0.19	0.42	5.85	0.77	13.45	0.03	1.53	77.71
11	भाटपार रानी	11426	0.07	0.37	4.88	0.40	14.29	0.04	1.78	78.13
12	बनकटा	12292	0.17	0.32	4.23	0.70	13.38	0.04	1.37	79.76
13	सलेमपुर	16678	0.03	0.40	6.17	0.41	12.72	0.02	0.68	81.13
14	भागलपुर	14806	0.03	0.38	3.23	0.16	14.27	0.03	1.31	80.56
15	लार	16942	0.05	0.83	7.18	0.33	13.56	0.02	1.65	71.34
16	तरकलवा	9306	0.20	0.26	5.81	0.30	8.12	0.02	1.11	84.15

शुद्ध कृषिगत भूमि :–

शुद्ध कृषि क्षेत्र मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है क्योंकि इसी के द्वारा हमें भोजन के लिये खाद्यानों की प्राप्ति होती है। शुद्ध कृषिगत क्षेत्र किसी क्षेत्र के विकास का मूलभूत आधार होते हैं, इसी के द्वारा क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक स्थिति का निर्धारण होता है। सामान्यतः मानव कृषि कार्य से सम्बन्धित विभिन्न सुविधाओं का विकास कर कृषित भूमि के विस्तार के लिए सदैव प्रयत्नशील रहा है। अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया समतल उपजाऊ मिट्टी वाला भाग है, यहाँ शुद्ध कृषिगत भूमि के क्षेत्र में परिवर्तन हुआ है। वर्ष 2001–02 में जनपद के कुल क्षेत्रफल का 198516 हे0 (79.74%) शुद्ध कृषित था जो वर्ष 2016–17 में 196420 हे0 (78.64%) हो गया है जो कमी को प्रदर्शित करता है (तालिका संख्या–1)।

उच्च कृषित भूमि धारण करने वाले क्षेत्र

इस श्रेणी के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया के विकासखण्ड बैतालपुर 85.60%, तरकुलवा 84.15%, गौरी बाजार 82.13%, देवरिया सदर 83.50%, सलेमपुर 81.13%, भागलपुर 80.56%, उच्च कृषित भूमि धारण करने वाले क्षेत्र हैं (तालिका संख्या–3)।

मध्यम कृषित भूमि धारण करने वाले क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र विकासखण्ड स्तर पर पथरदेवा 77.55%, देसई देवरिया 77.62%, रामपुर कारखाना 75.44%, रूद्रपुर 76.55%, भलुअनी 78.69%, भटनी 77.71%, भाटपाररानी 78.13%, बनकटा 79.76%, तथा

लार 71.34% के साथ मध्यम कृषित भूमि धारण करने वाले क्षेत्र हैं।

निम्न कृषित भूमि धारण करने वाले क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया का विकासखण्ड बरहज में 67.32% भाग पर कृषित भूमि का विस्तार पाया जाता है।

कृषित भूमि में परिवर्तन

अध्ययन क्षेत्र एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है, कृषि मानसून पर निर्भर है। इसलिये भारतीय कृषि को ''मानसून का जुआ'' कहा जाता है। चूँकि अध्ययन क्षेत्र में मानसूनी अनिश्चितता एवं अनियमितता है, इसलिये कृषित क्षेत्र के स्वरूप में परिवर्तन स्वभाविक है। पिछले दो दशक पूर्व जब हमारे यहाँ सिचाई के साधनों का विकास कम था तब हम मानसून की राह देखते थे। तब बहुत सारा कृषित भूमि बंजर, झाड़ियों एवं परती के रूप में रहता था और कृषि से वंचित हो जाता था। सूखे अधिक पड़ते थे, जिससे परती की मात्रा बढ़ जाती थी, समप्रति जल भराव के कारण ही सीमित मात्रा में परिवर्तन होता था। परन्तु वर्तमान समय में कृषि तकनीकों व सिंचाई के साधनों का समुचित विकास होने के फलस्वरूप, वन, झाड़ियों परती व बंजर भूमि को कृषित भूमि में परिवर्तित किया जाने लगा है। साथ ही सरकारी व निजी प्रयासों के फलस्वरूप कृषित भूमि में पर्याप्त परिवर्तन परिलक्षित होता है।

इस प्रकार शोधार्थी ने वर्ष 2001–02 व 2016–17 के आँकड़ों के आधार पर अध्ययन क्षेत्र के कृषित भूमि के परिवर्तन को तालिका एवं मानचित्र द्वारा दर्शाने का प्रयास किया गया है। तालिका संख्या–1 को दृष्टिगत अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2001–02 जहाँ 79.74% भू–भाग कृषित भूमि के अन्तर्गत था वहीं कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में वृद्धि तथा तकनीकी व सिचाई सुविधाओं के अभाव के कारण वर्ष 2016–17 में घटकर 78.64% हो गयी। इस प्रकार इन अध्ययन वर्षो के अन्तराल में अध्ययन क्षेत्र की कृषित भूमि में 1.10% का परिवर्तन हुआ।

उच्च परिवर्तन के क्षेत्र

इस श्रेणी के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के दो विकासखण्ड, जिसमें तरकुलवा वर्ष 2001–02 में 78.81% कृषित भूमि से 5.34% की वृद्धि कर वर्ष 2016–17 में 84.15% तथा भाटपाररानी वर्ष 2001–02 में 83.96% कृषित भूमि से 5.83% की कमी के साथ वर्ष 2016–17 में 78.13% हो गयी है। तरकुलवा विकासखण्ड में कृषि भूमि में वृद्धि का मुख्य कारण कृष्य बेकार भूमि तथा परती भूमि, में नवीनतम कृषि तकनीकों व सिचाई सुविधाओं का विकास करके इस प्रकार की भूमि का सुधार किया गया है। इसी विकासखण्ड में पिछले अध्ययन वर्ष की तुलना में वर्तमान अध्ययन वर्ष तक कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में भी कमी आई है। भाटपाररानी विकासखण्ड में कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में वृद्धि, परती भूमि में विस्तार तथा सिंचाई एवं अन्य तकनीकी सुविधाओं के अभाव के कारण कृषि भूमि में कमी आयी है।

मध्यम परिवर्तन के क्षेत्र

इस श्रेणी के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के सर्वाधिक विकासखण्ड सम्मिलित किये जाते हैं। जिसमें विकासखण्ड लार 4.59% कृषित भूमि में वृद्धि तथा बनकटा 3.82%, भटनी 3.33%, बरहज 4.18%, गोरी बाजार 2.14%, भलुअनी 4.21%, रामपुर कारखाना 4.48%, देसई देवरिया 4.98%, की कमी हुई है। विकासखण्ड लार में ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि में वृहत पैमानें पर सुधार किया गया है तथा साथ ही साथ परती भूमि में कमी है, जो कृषित भूमि में वृद्धि के प्रमुख कारण हैं। इसके अतिरिक्त अन्य विकास खण्डों में कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में वृद्धि कृषि भूमि में कमी के प्रमुख कारण हैं।

3. निम्न परिवर्तन के क्षेत्र :–

निम्न परिवर्तन वाले क्षेत्रों में पथरदेवा 0.2%, देवरिया सदर 0.09%, कृषित भूमि में वृद्धि हुई है, तथा बैतालपुर 0.92%, रूद्रपुर 1.41%, सलेमपुर 0.17%, भागलपुर 1.87%, की कमी हुई है। पथरदेवा और देवरिया सदर में कृषि भूमि में वृद्धि का प्रमुख कारण कृष्य बेकार भूमि और परती भूमि में सुधार किया गया है। अन्य विकासखण्डों में कृषि के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में भूमि का उपयोग बढ़नें के कारण कृषि भूमि में कमी आई है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

आँकड़ों के सांख्यिकीय विवेचन व मानचित्रीय प्रदर्शन के सम्मिलित विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामनें आता है कि जनपद देवरिया भूमि संसाधन से परिपूर्ण है। यहाँ निवास करने वाली जनसंख्या के सन्दर्भ में भूमि का उपयोग समयानुसार परिवर्तित हो रहा है। लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण कृषि भूमि उपयोग के स्वरूप में परिवर्तन की और आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र में वनों का विवरण पर्यावरण मानक से काफी कम है, इस क्षेत्र में वृक्षारोपण कर वनों में वृद्धि करने की अति आवश्यकता हैं। लार, बरहज और गौरी बाजार में कृष्य बेकार भूमि में वृद्धि हुई है, इसमें सुधार कर कृषि योग्य भूमि बनाए जानें की आवश्यकता हैं कृषि भूमि के समुचित रख–रखाव के अभाव तथा कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में वृद्धि के कारण विकासखण्ड देसई देवरिया, भलुआनी, भाटपाररानी, बनकटा, सलेमपुर तथा भागलपुर में परती भूमि में वृद्धि हुई है। इन क्षेत्रों में कृषि भूमि सुधार कार्यक्रमों द्वारा कृषि भूमि में विस्तार करने की आवश्यकता है। ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि सुधार में लार विकासखण्ड सबसे आगे है। इसी प्रकार अन्य विकासखण्डों में भी ऊसर भूमि को सुधार कर कृषि भूमि या अन्य उपयोग में लाया जा सकता है। बढ़ती जनसंख्या के दबाव के कारण कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में लगातार वृद्धि होती जा रही है और यह स्वाभाविक भी है। इसके परिणाम स्वरूप कृषि भूमि का क्षेत्र सिकुड़ता जा रहा है। कृषि भूमि के विकास के लिये कृष्य बेकार भूमि, परती भूमि, ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि आदि पर वृहद पैमानें पर सुधार की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंन्थ सूची

1. *वर्मा, एस0एस0 ''वन विनास का अभिप्रेरक कृषि विकासः गोरखपुर परिक्षेत्र तराई का अध्ययन''।*

2. *सिंह, जगदीश द्वारा सम्पादित पुस्तक ''संघृत भूमि उपयोग' (पूर्वी उ0प्र0 के सन्दर्भ में) पृ0 42–32।*
3. *Chandel, R.S. (1991) "Agricultural Change in Bundel Khand Region", Star Distributers, Varanasi, pp. 63-64.*
4. *updes.up.nic.in से प्राप्त आंकड़े।*
5. *तिवारी, आर0सी0 एवं सिंह, बी0एन0 (2010), ''कृषि भूगोल'', पृ0 76–77 ।*
6. *भू–लेख विभाग देवरिया से लिये गये आंकड़े।*
7. *Barlowe, R and Johnson, "Land Problems and Policies", McGraw Hill Book Company, New York."*
8. *Singh, B.B. (1979), "Agricultural Geography," Rana Publication, Varanasi, p.105*
9. *Shafi, M. (1960), "Land Utilization of Eastern U.P.", Aligarh University, Aligarh.*
10. *तिवारी, आर0सी0, 2011ः भारत का भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
11. *Agricultural Situations in India, 1981*
12. *Agriculture Statistics at a Glance, 2002*

11. *मौर्या, एस0डी0, 2008ः संसाधन भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
12. *सिंह, जगदीश, 2007ः आर्थिक भूगोल के मूल तत्व, ज्ञानोदय प्रकाश, गोरखपुर।*